ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-11* December- 2020
Innovation The Research Concept

एक उर्वरक देव : वृषभ

A Fertilizer God: Taurus

Paper Submission: 15/12/2020, Date of Acceptance: 26/12/2020, Date of Publication: 27/12/2020

ध्यानेन्द्र नारायण दूबे
सहयुक्त आचार्य,
प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग,
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

वैदिक ग्रन्थों, सायणभाष्य, निरूक्तकार तथा पुरावशेषों से ज्ञात वृषभ का जो रूप सामने आता है, वह है पशु रूप। विचारणीय है कि पुशरूप वृषभ कृषि और देवताओं से जुड़कर सामान्य लोक में अपना आदरणीय स्थान ही नहीं रखता अपितु उर्वरता, सम्पन्नता, बल, धन से सम्बद्ध होने के कारण वह एक देव के रूप में पूजित और प्रतिष्ठित रहा है।

The form of Vrisha known from Vedic texts, Sayanbhasya, Niruktakara and Antiquities comes out as animal form. It is worth considering that Pushpur Taurus not only keeps its respectable place in the common folk by connecting with agriculture and deities, but because of its association with fertility, prosperity, force, wealth, he has been revered and revered as a god.

मुख्य शब्द : अड्वान, ब्रीही, यव, अष्ट्रा, रेतः, रम्भा, सीरध्वज ।
Advan, Brihi, Yava, Ashtra, Reta, Rambha, Siradhvaja

प्रस्तावना

शस्यसंवर्धन का प्रतीक

ऋग्वेद में उल्लिखित 'वृषभ' शब्द के उल्लेखों के सूक्ष्म पर्यवेक्षण से कहा जा सकता है कि इसका मौलिक स्वरुप उर्वरतापरक हैं अपने जीवन निर्वाह के लिये प्रत्येक प्राणी को भोजन की आवश्यकता होती हैं और भोजन के लिये कृषि–कर्म अत्यावश्यक है। हम देखते हैं कि कृषिकर्म की मेधावी मानव के सांस्कृतिक विकास के इतिहास का प्रथम सोपान है। ऋग्वेदीय काल तक तो न केवल कृषि के वरन् कृषि के लगभग समस्त उपादानों के उल्लेख मिलने लगते हैं। इससे स्पष्ट है कि वैदिक आर्य कृषिकर्म से भिज्ञ थे।

अथर्ववेद[1] में राष्ट्र के सात अलंकार गिनाये गये हैं। 'ब्राह्मणश्च राजाच धेनुश्चानड्वांश्च ब्रीहिश्च यवश्च मधु सप्तमम्' – अर्थात् ब्राह्मण, राजा, गाय, अनड्वान चावल जौ और मधु यह सात राष्ट्रीय अलंकार हैं। इससे स्पष्ट है कि प्राचीन काल में गाय और वृषभ का उतना ही महत्व था जितना एक पूज्य ब्राह्मण, शासनाधिकारी राजा या सम्राट्, और जीवन प्रदाता अन्न– चावल, जौ आदि का महत्व था। वृषभ का महत्व चावल आदि अन्नों से पहले समझा जा सकता है क्योंकि उसी के द्वारा खेत की जुताई हो सकती थी और तदनंतर ही अन्नों के ढेर दिखाई पड़ते थे। ऋग्वेद में वृषभों एवं किसानों की मंगल कामना [2] के लिये वर्णन मिलता है–

"हमारे याह (वृषभ) और मनुष्य प्रसन्नता पूर्वक कार्य करें, वे हमारी क्यारियों में प्रसन्नतापूर्वक हल चलायें, हमारी वस्त्रायें (चमड़े की रस्सियां) ठीक से बंधी रहें हमारे अष्ट्रा (पैना) ठीक से कार्य करें।" इस के फल भूमि को अच्छी प्रकार खोदें, हमारे कीनाश (हलवाहे) बैलों के साथ ठीक से चलें। पर्जन्य (मेघ, बादल) हमारे लिये मधु और दुग्ध के साथ सुखदायक हों। हे शुनासीर (इन्द्र) हमें सब ऐश्वर्य प्राप्त हों।"

कृषि कर्म के इन वर्णनों से ज्ञात होता है कि तत्कालीन परिस्थितियों में कृषि के समस्त उपादानों (विशेषकर वृषभ) का अतीव महत्व था। यही कारण है कि गो का माहात्म्य ऋग्वेद में अनेकत्र दिखलाई पड़ता हैं वृषभ, गो की संतति है और वृषभ के माध्यम से ही कृषि संभाव्य हैं कृषिकर्म मानव जीवन का प्राण था अतः तत्कालीन लोगों के लिये अपनी भौतिक समृद्धि के लिये आध्यात्मिकता का स्वरुप प्रदान करना संशयास्पद नहीं था। इस प्रकार कृषिकर्म के क्षेत्र में वृषभ एक उर्वरक देव सिद्ध हुआ। भूमि उर्वरता की प्रतीकस्वरुपा है अथर्ववेद के 12वें मण्डल की एक ऋचा में उल्लेख है कि जिस प्रकार माता अपने बच्चे को दूध पिलाती है, इसी प्रकार यह भूमि हम सबका पोषण करनेवाली हो (सानो भूमिर्वि सृजतां मातापुत्राय में पयः)।

इस प्रसंग में यह उल्लेखनीय है कि "सीता" ऋग्वेद की ऋचाओं में शस्य– देवी (कृषि–देवी) के रुप में वर्णित है। क्योंकि 'कृषि देवताओं के एक सूक्त के एक मंत्र से सीता का आह्वान आशीर्वाद तथा उपज देने के लिये हुआ है।[3] पारस्कर गृह्यसूत्र वृषभलांगलकर्षणक्रिया (वृषभ द्वारा हल जोते जाने के कर्म) को श्रावणोत्सव पर सीतायज्ञ के रुप में वर्णित करता है। इस प्रकार कृषि देवी सीता के सम्बन्ध में ये विचार जैसा कि ऋग्वेद 4/57/6 से विदित है, वैदिक विचार कहे जा सकते हैं। [4] सबसे विचित्र बात यह है कि राम– सीता परंपरा के लिये ऋग्वेद में कोई भी विचारसूत्र नहीं मिलते यद्यपि जैकोवी ने इन्द्र– वृत्र युद्ध को राम–रावण युद्ध से समीकृत करने की चेष्टा की है। [5] इस समीकरण का आधार संभवतः पारस्पर गृहसूत्र का इन्द्र–पत्नी 'सीता' का उल्लेख है। [6]

सीता को इन्द्र–पत्नी मानने का आधार ऋग्वेद के अष्टम मण्डल की संभवतः वह ऋचा है, जिसमें इन्द्र को उर्वरापति कहा गया है।[7] तैत्तिरीय ब्राह्मण (2/3/10/1) में सीता का पैतृक नाम सावित्री मिलता है। [8]

वस्तुतः रामायण की नायिका सीता देवी के ऋग्वेदीय स्वरुप का प्रतीकात्मक महत्व हैं ध्यात्व्य है कि सीता सीरध्वज (जनक) की पुत्री थी (जनक, तो पिता को कहते हे। सीता को श्रौतस्मार्तपरंपरा में आदिदेवी माता⁄या यही कारण है उनके पिता सीरध्वज को जनक और उन्हे जानकी की संज्ञा दी गई। सीरध्वज, इन्द्र एवं सीता– ये तीनों शस्य सम्बर्धन के प्रतीक थे। निस्संदिग्ध रुप से इन्द्र मेध के प्रतीक माने जाते हैं जो (मेध) कृषि संवर्धन के संबल हैं। सीरध्वज लांगलकर्षण (कृषि सम्बन्धी वे क्रियायें जो एक किसान द्वारा पूरित होती हैं) तथा सीता उर्वरता के प्रतीक रुप में वर्णित हैं। वृषभ अपने सेचक एवं पूरक अर्थ में तीनों का प्रतिनिधित्व करते हुये उर्वरत्व का प्रतीक है यही कारण है कि पश्चातवर्ती साहित्य (ऋग्वेदीय साहित्य संरचना के बाद) में भी 'रम्भा'को 'सीता' तथा सीता के पिता को सीरध्वज ही कहा गया। जहाँ तक इन्द्र और राम के अस्तित्व–भेद का प्रश्न है एकमात्र प्रतीकात्मक है वैसे कहा जा सकता है कि ऋग्वेद में इन्द्र–विष्णु की मित्रत्व या भ्रातृत्व सम्बन्ध था। वेदोत्तरकाल के राम विष्णु के आंशिक अवतार कहे गये। अतः सीता का ऋग्वेदीय ऋचाओं में इन्द्र की पत्नी के रुप में वर्णन प्रतीकात्मक दृष्टि से समीचीन प्रतीत होता है।

सेचक स्वरुप

'वृषभ' शब्द का सेचनार्थक प्रयोग उसकी उर्वरता का द्योतक हैं रति– मंजरी [9] में वृषभ को 'शीघ्रकामों नताङ्ग' कहा गया है। इसका मूलभूत अर्थ ऋग्वेदीय उन ऋचाओं में स्पष्ट हो जाता है जहां इन्द्राणी गोवृन्द में ति भश्रृंग वृषभ की भांति इन्द्र के शैर्य की आकांक्षा करती है। दशममण्डल की एक ऋचा में शौर्यवान वृषभ का उपमान रुप में वर्णन हुआ हैं।

इस ऋचा में [10] इन्द्राणी का कथन है–."जैसे तीक्ष्णश्रृंग वृषभ गोवृन्द में गर्जन करता हुआ रमता है, वैसे ही तुम भी मेरे साथ रमण करो। तुम्हारे हृदय के साथ दधिमन्थन शब्द करता हुआ, कल्याणकर हो। भावाभिलाषिणी इन्द्राणी, जिस सोम का अभिषव करती है वह भी कल्याण कर हो। इन्द्र सर्वश्रेष्ठ है। ऋग्वेद के दशम मण्डल के सूक्त (ऋ०वे० 10/10/10) यम और यमी (भ्राता–भगिनी) के संवाद का आख्यान हैं यम, यमी से कहता है–"(सम्प्रति वह युग नहीं है इसलिये हे बहन) तेरे में रेतः सेक करने योग्य अन्य युवक पुरुष के लिये (वृषभाय) बाहु को धारण कर। हे सुभगे। (कामिनी) मुझे छोड़कर दूसरे को पति बना।" 'वृषभाय' की निरुक्ति (नि०, पृ० 189) 'रेतोवर्धयित्रे' तथा सायणभाष्य 'यानौरेतः सेवत्रे पुरुषाय' है। प्रथम मण्डल में इन्द्र की एक स्तुति में एक ऋचा के सायण भाष्य से वृषभ के सेचनसमर्थ स्वरुप का स्पष्टीकरण किया जा सकता है। [11] द्वितीय मण्डल में सेचनसमर्थ अर्थ में रुद्र को वृषभ कहा गया है। वृधा सेचनसमर्थः रुद्र महादेवः (2/34/2) इस प्रकार वृषभ के पौरुष एवं सेचनक्रिया सामर्थ्य के वर्णन से इसे सर्वथा उर्वरत्व का प्रतीक मानना युक्तिसंगत प्रतीत होता है।

वर्धक

निरुक्तकार की निरुक्ति और सायणभाष्य दोनों 'वृषभ' शब्द की व्युत्पत्ति में वर्षण अर्थ का द्योतन करते हैं। यह 'शब्द' नाना प्रकार के कामनाओं का वर्धक (पूरक) अर्थ में अपना महत्व रखता है और वर्षण से ही वृषभ कहलाता है।

ऋग्वेद में उल्लिखित वृषभ शब्द को अधिकांशतः वर्षक अर्थ में प्रयुक्त किया गया है। इन्द्रादिक– देवों की स्तुति में वृषभ शब्द का प्रयोग 'कामनाओं के पूरक' अभिमतवर्षक, अभिमत फलप्रदाता, जल वर्षक या अभीष्ट वर्धक अर्थ में हुआ है। [12]

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 23वें सूक्त में [13] इन्द्र को 'जनानां वृषभः' कहा गया है। इन्द्र के स्तुति में ऋषि कहता है ' यह इन्द्र चर्षणिप्रा (चर्षणयो मनुष्याः तेषाम् धनदिना प्रीणयिता) अर्थात् मनुष्यों को धनादि से प्रसन्न करनेवाली है और समस्त जनों के कामनाओं का वर्धक है। मनुष्यों का अधिपति (इन्द्र) बहुत लोगों से आहूत है। ' इसी प्रकार अग्नि को वर्षक (अर्थ) होने के कारण विभिन्न स्वरुपों में प्रदर्शित किया गया है। ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल में एक ऋचा इस प्रकार है–

"त्वमग्न इन्द्रो वृषभः सतामसि
त्वं विष्णुरुगायो नमस्यः।
त्वं ब्रह्मा रयि विद्ब्रह्मणस्पते
त्वं विधर्तः सचसे पुरंध्या।। 2/1/3.

साहित्यावलोकन

डॉ आशीष सेन ने एनिमल मोटिफएस इन एशियन इंडियन आर्ट डॉक्टर एस के सरस्वती ने सर्वे ऑफ इंडियन स्कल्पचर्स जेपी फैजाने द गोल्डन बाऊ एनरिचन्युमैन द ग्रेट मदर्स जैसी रचनाओं मां धर्म संस्कृति देवता एवं अन्य सामाजिक परिपेक्ष में वृषभ के स्वरूप की व्याख्या की है इस लेख में वृषभ को एक उर्वरक देव के रूप में पूजित एवं प्रतिष्ठित होने की परंपरा को लौकिक विचार धारा से जोड़ने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

वृषभ एक पशु है जो सामान्यता कृषि कर्म के साधन के रूप में प्रतिष्ठित है ऋग्वेद भास्कर ग्रह सूत्र तैत्तिरीय ब्राह्मण सायण भाष्य व निरुक्त में वृषभ को अनेक भारतीय वैदिक देवताओं से जोड़ा गया है इंद्र के साथ वृषभ का जुड़ाव तथा उसके तीक्ष्ण सीग व बल सृजन का महत्वपूर्ण कारण माना गया है वस्तुतः वृषभ को शस्य संवर्धन रोचक वर्धक के रूप में भारतीय संस्कृति में स्वीकार किया गया है

निष्कर्ष

वस्तुतः वर्षक रुप में वृषभ का आशय पूरक है। चाहे बृष्ट्यादि द्वारा शस्यसंवर्धन की पूर्ति हो या यज्ञयागादि द्वारा मनौ भीष्टावाप्ति अथवा रेतनिर्षिचन (वर्षण) से हो। वृषभ, इन सभी अर्थो का पूरक है। 'वृषभ' शब्द में व्याप्त यह सभी उर्वरत्व के उद्बोधक हैं। साधारणतौर पर शस्यसंवर्धन के लिये वर्षा के प्रतीक इन्द्र माने जाते हैं जिनके ज्येष्ठत्व के अनुरुप ऋग्वेदीय देव–मण्डल में वृषभ शब्द का बहुत्र उल्लेख हुआ हैं प्रथम मण्डल की एक ऋचा मे 'वृत्र–वध' प्रसंग में कहा गया है 'मेघ रुप से आपन्न वृत्रासुर के निरोध के कारण जल विशेष स्थान द्युलोक पृथ्वी पर जल वृष्टि न सम्पन्न हो सकी। अतएव धनप्रदा धरती पर शस्योपकारादिक कार्य न सम्पन्न हो सके अर्थात् जलवृष्टि के अभाव में कृषि की व्यवस्था संकट मे पड़ गई। इस कार्य के लिये, इन्द्र ने अंधकार स्वरुप मेघ को ज्योतिमात वज्र की सहायता से उद्भेदित करके पूर्ण रुप से दुह लिया। वृषभश्चक्र इन्द्रो 'इन्द्र ने वर्षा किया। वस्तुतः ये प्रसंग प्रमाणित करते है कि वृषभ एक उर्वरक देवता के रुप के ही प्रतिष्ठित रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अथर्ववेद 9.1.22. ।*
2. *शुनं वाहा, शुनं नरः शुनं कृषतु लांगलम्।*
   शुनं वस्त्रा वध्यन्तां शुनमष्ट्रा मुर्दिगय।।"–ऋग्वेद 5. 57.4. ।
   शुनं न फाला विकृषन्तु भूमि शुनं कीनाशा अभियन्तु वाहै।।
   शुनं पर्जन्यों मधुना पयोभिः शुनासीरा
   शुनमस्यासुघन्तम्।। – ऋग्वेद 4.57.8. विस्तार के लिए द्रष्टव्य 4.57.1–8 ।
3. *ऋग्वेद 4.57.6– "अर्वाचीसुभगे भव सीते वन्दामहेत्वा। यथा नः सुभगाासिसि यथानः सुफलाससि ।। – वैदिक देवशास्त्र, डा० सूर्यकान्त पृ० 140 एवं आगे ।*
4. *आप्टे, वी० एम०, सोसल एवं रिलीजियस लाइफ इन द गृहसूत्राज, अहमदाबाद 1939 पृ०–106–10 ।*
5. *वही, पृ० 106–7. ।*
6. *इन्द्रपत्नीमूवह्क्ये सीतां सा मे त्वनपायिनी भूयात्। – पार० गृ० सू० 2.17.9. ।*
7. *आ याहीम इन्दवो श्वपते गोपत उर्वरापते। सोमं सोमपते पिब।*
8. *अथह सीता सावित्री ।सेमं राजानं चकमे।– ऋग्वेद 4.21.3 ।.*
9. *बहुगुण बहुबन्धः शीघ्रकामो नताङ् सकल रुचिर देहः सत्यवादी वृषोनां, – वाचस्पत्यम्, षष्ठ, पृ० 4955 में उद्घृत।*
10. *ऋग्वेद 10.86.15 ।*
11. *यो धृष्णुना शवसा रौदसी उभे वृषा वृषत्वा वृष्यो नृंजते। –1.54.2. ।*
    स इन्द्रः वृषा सेचनसमर्थः वृषत्वा वृषत्वेनानेनैव सेचनसार्ध्येन वृषभः वर्षिता कामानां यद्वा वृष्टि उदकानाम्।। – सा०भा०ऋ०सं०, प्रथम पृ० 380. ।
12. *ऋग्वेद 1.31.5(कामानां वर्धिता), 1.33.10, 1.54.2, 1. 19.28, 1.140.10, 10.177.1, 3.30.9, 3.31.18, 3. 38.5, 3.38.7, 3.47.1, 3.48.1, 3.51.3, 3.55.20, 3.56.3, 2.33.4, 6,7,8,15,13, 9.64.1–2, निरुक्त 9/17, 4/9. ।*
13. *अ चर्षनिप्रा वृषभे जनानां राजाकष्टीनामं पुरुहूत इन्द्रः – ऋग्वेद 1.23.1. ।*
14. *"May Indra, who is the cherisher of Men, the benefactor of manldnd, the lord of men, the adored of many (come to us)." R.S.T., IT, Wilson, P.98.*